IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# संगीतः एक कला

# MUSIC: AN ART

DR. ARTI SISODIA
Assistant Professor
M.K.P.(PG) College, Dehradun (Uttarakhand) Affiliated to H.N.B.Garhwal University (A Central University)

यद्यपि संगीत मानव के लिए नैसर्गिक है किन्तु इतना तो निश्चित है कि आदिकाल से ही संगीत का प्रादुर्भाव एक कला के रूप में नहीं हुआ। आदि मानव अपने उद्‌गार, खुशी आदि गुनगुनाकर ही व्यक्त करता होगा। जिस प्रकार चिड़ियों को चहचहाना कोई नहीं सिखाता, पक्षियों को उड़ना, शिशु को रोना–हँसना स्वतः आता है, उसी प्रकार मनुष्य को गुनगुनाना, गाना, नाचना स्वतः आता है, किन्तु इतना निश्चित है कि उसका रूप परिष्कृत न हो। धीरे–धीरे इस कला का जन्म हुआ तथा हमारे ऋषियों, आचार्यों और कलाकारों की सहस्त्रों वर्षो की साधना तथा तपस्या के परिणामस्वरूप संगीत एक उच्च कला की अवस्था तक पहुँचा।

कला शब्द की उत्पत्ति 'कल्' + 'ला' धातु से हुई है। 'कल्' का अर्थ है– सुन्दर व मधुर तथा 'ला' धातु का अर्थ है– प्राप्त करना अर्थात् कला का अर्थ है– ''सुन्दर को प्राप्त करना।'' मनुष्य जब अपने हृदय के आनन्द से प्रेरणा पाकर अपने हृदय के भावों को सुन्दरतम रूप में प्रकट करने की चेष्टा करता है, तभी वह कला के क्षेत्र में प्रवेश करता है।

कुछ विद्वान इसकी व्युत्पत्ति 'कं' धातु से मानते हैं– ''कं (सुखम) लाति ति कलम्'', ''कं आनन्दं लाति इति कला।'' अन्य विद्वान ''कला'' शब्द की व्युत्पत्ति ''कल्'' धातु से मानते हैं, जिसका अर्थ है प्रेरित करना। इस प्रकार कला के विभिन्न अर्थ निम्न प्रकार हैं–

1. कला का अर्थ– सुन्दर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला।
2. कला का अर्थ– शिल्प, हुनर अथवा कौशल।

इन शब्दों के अतिरिक्त कला– ''आर्ट'' (ART) शब्द का प्रयोग 13वीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुआ जिसकी मूल धातु– ''अर'' है और जिसका अर्थ– बनाना, पैदा करना या फिट करना माना गया है। 1

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सुन्दर एवं सुखद सृजन के साथ ही साथ शिल्प कौशल की प्रकिया है।

कला, विषय आर शैली का वह सुसंघटित समवाय है, जो ऐन्द्रिय माध्यम के द्वारा उन तत्वों से व्यक्त होता है, जिनमें अभिव्यंजना शक्ति होती है, जो पारस्परिक सम्बन्धों से संशिलष्ट होते हैं और जो एक दिव्य उपस्थिति का सृजनात्मक आह्‌वान है। 2

प्लेटो ने कला को सत्य की अनुकृति माना है। अरस्तु के अनुसार– कला प्रकृति है और इसमें कल्पना भी है, क्रोचे, अभिव्यक्ति को ही कला मानते हैं। फ्रायड के शब्दों में– अतृप्त, इच्छाओं तथा वासनाओं का प्रदर्शन ही कला है। हीगल–कला को अधिभौतिक सत्ता को अभिव्यक्त करने का माध्यम मानते हैं। एक विद्वान के अनुसार– रेखाओं, रंगो, शब्दों, ध्वनियों व गतियों के माध्यम से मनुष्य के मनोगत भावों की वाह्य अभिव्यक्ति ही कला है।

इसी प्रकार टाल्स्टाय के अनुसार– ''यदि अपने भावों को क्रिया, रंग, रेखा, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्त किया जाये कि उसे देखने या सुनने वाले में ही वही भाव उत्पन्न हो जाये तो उसको 'कला' कहा जायेगा। 3

अपने मन में उद्वेलित भावों की अभिव्यक्ति हेतु, अपनी कल्पना शक्ति द्वारा कलाकार एक नवीन सृजन करता है, अतः उसकी भावात्मक अभिव्यक्ति के परिणामस्वरूप कलात्मक सृजन सम्भव हो पाता है, जिसके कारण कला का जन्म होता है।

फ्रैंच समालोचक फागुस के अनुसार– भाव की उस अभिव्यक्ति को कला कहते हैं, तो तीव्रता से मानव हृदय को स्पर्श कर जाती है। कला में भावों को व्यक्त करने का ऐसा माध्यम होता है, जिसका प्रभाव अन्य लोगों के हृदयों पर गहरा पड़ता है। मानव हृदय उस प्रभाव में चिरकाल में डूबा रहता है और उसका असर स्थायी मानव मस्तिष्क पर पड़ता है।4

पंचाला ने सर्वप्रथम कलाओं का वर्गीकरण किया, जिसमें उन्होंने 54 मूल कलाएं और 514 मूल कलाओं पर आधारित कलाऐं बताई हैं। तत्पश्चात् वात्स्यायन के 'कामसूत्र' में कलाओं को चौंसठ वर्गो में बाँटा गया है। इसके पश्चात् अपने विद्वानों तथा दार्शनिकों ने कलाओं का अनेक प्रकार से वर्गीकरण किया है।

इन कलाओं में वे कलाएं जिनमें लालित्य का अंग विद्यमान रहता है, ''ललित कलाऐं'' कहलाती हैं।

जब मानव अपने किसी गुण की अभिव्यक्ति सुन्दर व आकर्षक ढंग से करता है तो उसके उस गुण की अभिव्यक्ति कला का रूप ले लेती है। उस सौन्दर्यमयी कला की सबसे सौन्यदर्यमयी विद्या ही 'ललित कला' है।5 इस सौन्दर्यमयी कला का एकमात्र प्रयोजन मानव हृदय को प्रसन्नता प्रदान करना होता है।

ये आनन्दात्मक होने के कारण ऐन्दिय सुख के साथ–साथ मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक सुख भी प्रदान करती है और मानवीय जीवन में मूल्यों की वृद्धि करती है। यद्यपि ललित कलाओं से कोरे भौतिक सुख प्राप्त नहीं होते तथापि इनसे हृदय और मस्तिष्क को अतीव आनन्द की प्राप्ति होती है।6

जब चेतना जागृत रहती है तब उससे अनुभवों का संग्रह होता चला जाता है। अनुभूति धनीभूत होकर रचनाकार के द्वारा रचना के रूप में सृजित होती है। ललित कला में अनुभूति इतनी तीव्र और सौन्दर्यमयी होती है कि इन्द्रियों के द्वारा अनुभत भौतिक सुख से कलाजनित आनन्द अतीन्द्रिय हो जाता है। कलाकृतियों का यह सौन्दर्यानुभव तीव्रतम, विशुद्ध तथा दिव्य होता है।7

ललित कलाओं की अनुभूति अपरोक्ष होती है। उसका माध्यम दृश्य हो अथवा श्रव्य हो, उसके तत्व रेखा, वर्ण, स्वर, लय, शब्द, छन्द कुछ भी हों किन्तु उसकी अनुभूति प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष होती है तथा वह अनुभूति अत्यन्त आह्लादकारी व आनन्ददायक होती है।

आदिकाल से मानव आनन्द की खोज करता आया है और प्रकृति के सौन्दर्य से प्रभावित रहा है। विकास के साथ–साथ मानव की कल्पना, सृष्टि से तदाम्य स्थापित करती रही और इस प्रकृति को सुन्दर रूप देने की चेष्टा करने लगी। उसकी इस चेष्टा को आधिकाधिक दिव्य व सौन्दर्यमयी बनाने के लिए ललित कलाओं का जन्म हुआ।8

अन्य ललित कलाओं में संगीत–कला का सर्वोच्च स्थान है। शॉपेन हावर, संगीत को कलाओं का सरताज मानते हैं। भारत में संगीत कलाराधना प्राचीन काल से अधुना तक चली आ रही है, जिसका प्रमाण प्राचीन शिल्प–कृतियों तथा साहित्य में उपलब्ध होता है। वैदिक काल में संगीत कला शिल्प के नाम से प्रचलित थी।

''ऋग्वेद शांखायन, ब्राह्मण की ''त्रिवृद्वै शिल्प नृत्य गीतं वादितमिति'' (29–5) इस पंक्ति से स्पष्ट है, इन तीनों कलाओं को शिल्प कला कहा जाता था। इसी 'शिल्प' शब्द के एकत्रीकरण के रूप में कालक्रमानुसार 'संगीत' शब्द का प्रचार हुआ।9

संगीत का प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति, पशु–पक्षी, प्रकृति–पाषाण सभी पर समान रूप से पड़ता है। संगीत की मधुर स्वर–लहरियों से मुग्ध होकर सभी उसकी सलिल सरिता में स्नान करने लगते हैं।

बड़े–बड़े दर्शनिक, विचारक एवं कलाकार संगीत को कल्पनात्मक एवं कलात्मक विद्या मानते रहे हैं और मानते रहेंगे। अरस्तु ने कहा है– "Art is a combination of invitation and imagination."10

अन्य समस्त कलाओं के समान संगीत–कला पूर्णतः रचनात्मक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें संगीतज्ञ कल्पना के माध्यम से प्रत्येक बार स्वरों को नवीन रूप देकर सौन्दर्य उत्पन्न करता है। हर समय उससे नवीनता बनाए रखना, कल्पना का कार्य है, जो संगीतकार की योग्यता व कल्पना शक्ति पर निर्भर करता है।

संगीत का प्रभाव सर्वदेशीय तथा सर्वकालिक है। संगीत की रचना कितनी ही क्लिष्ट हो, कोई साधारण व्यक्ति यह तो नहीं समझेगा कि कौन सा राग है, कौन सी ताल है, कौन से स्वर कोमल अथवा शुद्ध लगे रहे हैं, परन्तु सांगीतिक ध्वनियों, स्वर लहरियों, तबले की संगत से आनन्दित अवश्य होगा। इसीलिए अरस्तु ने कहा है– ''संगीत, ध्वनियों के आरोह, अवरोह के माध्यम से मस्तिष्क की झंकृत करता है।''

कुछ विद्वानों के मतानुसार भाषण ही हृदयगत भावों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है किन्तु इसके विपरीत जब उपर्युक्त प्रयोजन हेतु भाषा असफल हो जाती है, वहाँ संगीत ही काम आता है।

वाल्टर पटर ने तो यहाँ तक कहा है– ''जितनी भी कलाऐं हैं वे सब संगीत की ओर उन्मुख हैं।''

शापन हॉवर के अनुसार – "Music is the highest are which gives us abandon, where the will to live is silenced. It is the vehicle of religious and mistical experience." **11**

विद्वानों के मतानुसार कला में मनुष्य को मोक्ष मार्ग की ओर उन्मुख करने की शक्ति होनी चाहिए तथा उसका अन्तिम उद्देश्य आध्यात्म की प्राप्ति होना चाहिए। संगीत के सन्दर्भ में इसकी पुष्टि इस बात से हो जाती है कि प्राचीन कला से ही संगीत कला का सम्बन्ध उस परम ब्रह्मा ईश्वर स रहा है तथा इस ईश्वरोपासना का मुख्य साधन बनकर ही पल्लिवित हुई।

प्रत्येक कला के कुछ तत्व अथवा सिद्धान्त होते हैं, जो उस कला कहलाने योग्य बनाती है, वे तत्व हैं– विचार (Conception), ध्यान (Meditation), आध्यात्मिकता (Spirituality), प्रकृति (Nature), प्रतीकवाद (Symbolism) तथा कल्पना (Imagination)।

संगीत कला में भी इन्हीं मूल तत्वों का समावेश होता है। संगीतज्ञ के मन में किसी घटना अथवा परिस्थितिवश कोई भाव अथवा विचार होता है जिसको स्वरों के माध्यम से व्यक्त करने अर्थात् साकार रूप देने के लिए वह उस पर ध्यान केन्द्रीत कर चिन्तन–मनन करता है तथा उसे नवीन रूप देने के लिए कल्पना तथा प्रकृति का सहारा लेता है एवं प्रतीकों के माध्यम से अपनी रचनायें श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करता है। उसकी कृति में नैतिकता व आध्यात्मिकता होती है, जो प्राचीन काल से ही भारतीय कलाओं की एक मुख्य विशेषता रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–


1. डॉ0 सरन बिहारी लाल सक्सेना एवं डॉ0 सुधा सरन– ''कला–सिद्धान्त और परम्परा'' (अ0–1 पृ0–2)
2. ठाकुर जयदेव सिंह– ''भारतीय संगीत में ललित कला का महत्व'' (''संगीत'' शोध अंक वर्ष–61, अंक–1–2, जनवरी–फरवरी 1995, पृ0–110–111)
3. डॉ0 सरन बिहारी लाल सक्सेना एवं डॉ0 सुधा सरन– ''कला–सिद्धान्त और परम्परा'' (अ0–1 पृ0–7–8) उद्घृत Totlstoy –What is Art, Page 123
4. डा0 अनुपम महाजन– ''भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र'' (अ0–3, पृ0–42)
5. विजय लक्ष्मी जैन– ''ललित कलाएं एवं संगीत'' (अ0–2, पृ0–8)
6. डा0 अनुपम महाजन– ''भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र'' (अ0–3, पृ0–46)
7. डॉ0 शुकदेव श्रोत्रिय– ''कला बोध एवं सौन्दर्य (खण्ड–1, पृ0–20)
8. विजय लक्ष्मी जैन– ''संगीत दर्शन'' (अ0–2, पृ0–8)
9. तुलसीराम देवांगन – ''भारतीय संगीत शास्त्र'' (अ0–2, पृ0–24)
10. कु0 सत्यवती शर्मा–लेख– ''संगीत और कल्पना'' (''संगीत कला विहार'', वर्ष–36, अंक–36, फरवरी 1983, पृ0–53)
11. विजय लक्ष्मी जैन– ''संगीत दर्शन'' (अ0–2, पृ0–16)